



माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

2017

24 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय भारतीय संगीत	विषय कोड 1 6 1	परीक्षा का माध्यम हिन्दी
स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें		

सरल क्रमांक

अंकों में परीक्षार्थी का रोल नम्बर

0	2	7	3	1	9	9	0	0
---	---	---	---	---	---	---	---	---

शब्दों में

0	दो	सात	तीन	एक	नौ	नौ	शुन्य	शुन्य	आठ
---	----	-----	-----	----	----	----	-------	-------	----

नीचे दिये गये उदाहरण के अनुसार रोल नम्बर भरें

एक	एक	दो	चार	तान	पा	काव	छः	आठ
----	----	----	-----	-----	----	-----	----	----

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्ता	विष्टी करें (अंकों में)
1			
2			
3			
4			
5			
6			
7			
8			
9			
10			
11			
12			
13			
14			
15			
16			
17			
18			
19			
20			
21			
22			
23			
24			
25			
26			
27			
28			
कुल प्राप्तांक शब्दों में		कुल प्राप्तांक अंकों में	

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष द्वारा भरा जावे

क - पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में शब्दों में

ख - परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक

ग - परीक्षा का दिनांक

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

विद्यार सेकण्ड्री परीक्षा C.N. 311002

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर
<i>[Signature]</i>	<i>[Signature]</i>

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होतो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
<i>[Signature]</i>	<i>[Signature]</i>

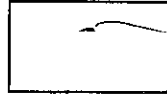
परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

2



योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 2 के अंक



कुल अंक



प्रश्न क्र.

दण्ड 'अ' गायन एवं वादन

उत्तर 1

- (i)
- (ii)
- (iii)
- (iv)
- (v)

चार
 चार
 दो
 वाइस 22
 डाफ़ी

उत्तर 2.

- (i)
- (ii)
- (iii)
- (iv)
- (v)

कुण — स्पर्श स्वर
 रात्रि छि वारह से दिन वारह वजे तक — पूर्व राग
 संकीर्ण — दो या आधि रागो से मिश्रित
 तान — द्रुत गति से स्वर विस्तार छिया
 दिन छि वारह से रात्रि छि वारह वजे तक — उत्तर राग

उत्तर 3.

- (i)
- (ii)
- (iii)
- (iv)
- (v)

असत्य
 सत्य
 असत्य
 असत्य
 सत्य

3



योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 3 के अंक

=



कुल अंक



उत्तर 4.

राग. विहाग.

आरोहः नि सा गी, म प, नी. सां. |
अवरोहः सां नी ध प, म प ग म ग, सा. |

उत्तर 5.
राग. भैरवी.

वादी. मध्यम 'म'
सम्वादी. सा षड्ज

उत्तर 6.

लक्षण गीत- लक्षण गीत वह होता है जिसमें राग के लक्षण (पड्ड) वादी, सम्वादी, विवादी, वर्ज्य, राग के गाने का समय तथा अन्य रागों से बचना इत्यादि विषय लेकर किसी ताल में निबद्ध करना लक्षण गीत कहलाता है। यह सभी रागों में प्रायः गाया जाता है। इसे पारम्भिक लक्षा के छात्रों के लिए तैयार किया जाता है। इसे मंच या सभाओं नहीं गाया जाता है।

(4)

$$\boxed{\text{ए}} + \boxed{\text{अ}} = \boxed{\text{आ}}$$

य $\frac{1}{2}$ पृष्ठ पृष्ठ 4 एक एक



अन्तर 7.

आधुनिक पद्धति से श्रुतियों पर स्वरो की स्थापना =

चतुश्चतुश्चतुश्चैव षड्जमध्यमपञ्चमः ।
 द्वि द्वि निषाद गंधारो त्रिखीरिषभ धैवतो ॥
 षड्ज मध्यम पंचम स्वरोऽपि ५-५ श्रुतियां,
 निषाद गंधार स्वरोऽपि २-२ श्रुतियां तथा
 रिषभ धैवत अपि ३-३ श्रुतियां होती है इस प्रकार
 कुलमिलाकर २२ श्रुतियां होती है।
 आधुनिक पद्धति के अनुसार प्रत्येक स्वर की
 उसकी प्रथम श्रुति पर स्थापित करते हैं।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
↓				↓			↓	↓				
सा				रे			ग	म				
14		15	16	17	18	19	20	21	22			
↓						↓				↓		
प						ध				नी		

5

$$\boxed{\text{योग}} + \boxed{\text{पृष्ठ के अंक}} = \boxed{\text{कुल अंक}}$$



उत्तर 8

ताल-तीव्रा

इसमें पहली मात्रा पर सम (X) भी तथा खाली (o) माना जाता है

मात्रा- 7, विभाग- तीन, ताली- 1, 4, 6 पर
 धा दिं ता | ति ट कुत | गुदि गुन

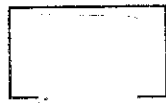
दुगुन लय = धादिं ता ति ट कुत गुदि गुन धा दिं ता | ति ट कुत गुदि गुन

उत्तर 9

जीवन परिचय- संगीत स्वामी दुरेदास

इन्होंने जन्म के विषय में बहुत मतभेद है कि अनुमानतः विद्वानों का मत है कि इनका जन्म 1537 में हुआ था। उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले के राजपुर नामक गाँव में शाश्वत बाह्यण पिता आशुधर तथा माता गंगादेवी के गर्भ से इनका प्रादुर्भाव हुआ था ये जन्म से ही विलक्षण प्रतिभा से सम्पन्न थे। अतः इनका मन बाल्यकाल से ही संगीत साधना तथा भगवत भक्ति में लग गया। इनके पुज्य पिता जी भी बहुत बड़े संगीतकार थे इसलिए इनको भी संगीत इनके पिता जी से ही प्राप्त हुआ इनका विवाह अल्हाय में ही हो गया लेकिन ये ग्रहस्थ जीवन को ज्यादा दिनों तक व्यतीत नहीं किया

6



पढ़े हुए पृष्ठ

+



पृष्ठ 6

=



कुल अंक



प्रश्न क्र.

इसलिए संगीत साधना के लिए, ये ब्रह्मदावन के निकुञ्ज वन में पहुँचे। वहाँ पर इन्होंने संगीत की घोर साधना करते संगीत के द्वारा ही भगवान श्री कृष्ण की साक्षात् साक्षात् प्रतिमा को प्रकट किया और इस प्रकार इन्होंने ब्रह्म का साक्षात्कार किया इसलिए इनकी नाद ब्रह्म योगी कथ्य जाता है।

स्वामी जी के कई शिष्य थे परन्तु इनके मुख्य शिष्य संगीत सम्राट तानसेन थे।

इस संसार में ऐसा डो न व्यक्ति होगा जो तानसेन को न जानता हो। तानसेन वादशाह

अकबर के दरबार में नवरत्नों में एक थे। तानसेन स्वामी हरियास जी के वर में शेष बताते तथा उनकी प्रशंसा करते थे।

एक दिन वादशाह अकबर ने स्वामी हरियास जी का गायन सुनने की जिद की तानसेन तथा वादशाह अकबर ही स्वामी

जी की कुरियाँ पर पहुँचे अकबर झाड़ी के पीछे छुप गए तथा तानसेन कुरियाँ पर और स्वामी जी को प्रणाम किया। वहाँ तानसेन

गुरु जी के सामने अशुद्ध ध्रुपद गाने लगा तब स्वामी जी ने तानसेन को डाटा तथा

उस ध्रुपद का शुद्ध रूप सुनाया अकबर स्वामी जी का गायन सुनकर भावविभोर हो गए तथा उनके चरणों में गिर पड़े।

कुछ लोग स्वामी जी को लीलावती का अवतार मानते हैं, इन प्रकार साधना करते हुए स्वामी ब्रह्मलीन हो गए लेकिन हम लोगों की आत्मा

B
S
E

7



योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 7 के अंक

=



कुल अंक



में आज भी जिया है। इनकी शिष्य परंपरा आज भी भारतीय शास्त्रीय संगीत की सेवा में अभ्यासरत है।

उत्तर 10.

तानपुरा.

तानपुरे की उत्पत्ति सरस्वती माँ की वीणा से ही ^{परिचय} ^{हो} ^ग ^ई ^{है}। कुछ लोग इसका अविष्टार शिव जी की मानते हैं। तानपुरे में चार तार होते हैं जिसमें तीन तार षड्ज के तथा एक तार पंचम की। इसको थोड़ा ऊँचा डर मध्यम से मिलाते हैं। तानपुरे का स्वर इतना मधुर होता है कि इसके स्वर को सुनते ही सामने वाला गाने के लिए मचल उठता है।

तानपुरे के अंग-

- (1) तुम्बा
- (2) तवली
- (3) ब्रज
- (4) धागा
- (5) डील मोगरा
- (6) लंगोटा
- (7) पत्तिया
- (8) डाण्ड
- (9) गुल
- (10) आरिया आराब
- (11) ताए गहन
- (12) खूटियाँ

$$\boxed{\quad} + \boxed{\quad} = \boxed{\quad}$$

य

पृष्ठ 8 के अंक

कुल अंक



(i) तुम्बा = यह गोल लोड़ी का ऊपरा हुआ भाग होता है। जो डाण्ड के नीचे जुड़ा होता है। यह तुम्बा होता है।

(ii) तवली = गोल लोड़ी के छेद हुए भाग के ऊपर ~~उपर~~ का भाग काटकर उसको एक लोड़ी के टुकड़े से ढक दिया जाता है। उसे तवली कहते हैं।

(iii) ब्रज = इसे घुड़प अथवा घोड़ी कहते हैं। यह डाण्ड के ऊपर स्थित होता है। यह लोड़ी तथा हड्डी की चौड़ी आकृति की बनी होती है। इसे ब्रज कहते हैं।

(iv) धागा = इसे तुम्बा तथा डाण्ड पर बांधे होते हैं। जिससे तानपुर के झंकार में बद्ध होती है। इसे धागा कहते हैं।

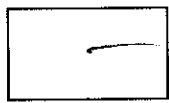
(v) डोलमोटा एवं लंगोट = डाण्ड के नीचे एक खुरी होती है जिसमें तान की बांधा जाती है। उसे डोलमोटा तथा लंगोट कहते हैं।

9



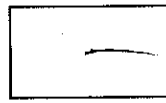
योग

+



पृष्ठ 9 के अंक

=



कुल अंक



(vi) पत्तियाँ \Rightarrow तानपुरे की शोभा बढ़ाने के लिए तथा उत्कृष्ट शृंगार करने के लिए जो लकड़ी की पतली-2 टुकड़ियाँ लगाई जाती हैं उसे पत्तियाँ कहते हैं।

(vii) डाण्ड \Rightarrow डाण्ड एक खोखली लकड़ी का बना होता है जिसमें खुरियाँ लगी होती हैं उसे डाण्ड कहते हैं।

(viii) गुल \Rightarrow जहाँ पर तुम्बा और डाण्ड का मेल होता है उसे गुल कहते हैं।

(ix) आरि या अटाक = तुम्बा से डाण्ड तक जो तार जाते हैं उनको जहाँ पर स्थापित किया जाता है उसे आरि या अटाक कहते हैं।

(x) तारगहन या तारदान \Rightarrow तुम्बा से ऊपर डाण्ड तक तार जाते हैं जहाँ पर ऊई छिद्र मिलते हैं जिन्हें ऊपर होकर तार जाते हैं उसे तारगहन कहते हैं।

(xi) खुरियाँ \Rightarrow तुम्बा में लगे हुए डाण्ड में चार खुरियाँ होती हैं जिन्हें तार बंधे होते हैं उन्हें खुरियाँ कहते हैं।

BSSE

10

$$[\quad] + [\quad] = [\quad]$$

यौन ... पृष्ठ ... अंक ... कुल ...



प्रश्न क्र.

उत्तर 11

(ii) मानव जीवन में संगीत की आवश्यकता

मानव जीवन से संगीत का रिश्ता प्राचीन काल से चल रहा है। संगीत माध्यम से ही लोक अपने मानसिक तथा शारीरिक काव को दूर करते हैं।

जिस समय बाघ यंत्रों का अविष्कार नहीं हुआ था उस लोग पशुओं और वस्तुओं के माध्यम से मनोरंजन तथा थकावट दूर करते थे।

इसका चार वेदों में प्रमुख वेद सामवेद में वर्णन संगोपांग प्राप्त होता है।

संगीत बालक के जन्म समय से मृत्यु पर्यन्त जुड़ा हुआ होता है। बालक के जन्म उत्सव को मानने के लिए तथा माहौल को खुशहाल बनाने के लिए संगीत का प्रयोग किया जाता है।

बालक की शादी पर भी मनोरंजन करने के लिए संगीत की उपयोगिता है। जब व्यक्ति का देहावसान होता है

तब उसके अन्त्येष्टि सम्कार करने के लिए संगीत उपयोगी है।

संगीत का प्रयोग लोक मनोरंजन के लिए होते हैं। हमें इसका प्रयोग मनोरंजन के लिए प्रयोग करने के लिए साधना तथा

भगवत भक्ति के लिए उपयोग करते हैं। संगीत को किो मनुष्य का जीवन अधूरा है।

B
S
E